रात्रिक्लास 29-2-68 ओमशान्ति शिव बाबा याद है?

बच्चों को समझाया है और कोई भी धर्म स्थापक कोई सब का कल्याण नहीं करते हैं। वह तो आते हैं सब को ले जाने आते हैं। जो सभी का लिबरेट और गाईड करते हैं उनका ही महिमा गायन है। जो भारत में ही आते हैं तो भारत सब से ऊंच देश ठहरा। और तो आते ही हैं पीछे। न बहुत सुख न इतना दुःख ही देखते हैं। भारत की महिमा बहुत करनी है। बाप ही आकर सर्व को सदगति करते हैं। तब ही शान्ति होती है। विश्व में शान्ति ऐसे ही होती है। विश्व में शान्ति थी सृष्टि के आदि में। स्वर्ग में एक धर्म था। अभी अनेक धर्म है। बाप ही आकर शान्ति स्थापन करते हैं। कल्प2 मिशल करते हैं। तुम बच्चों को ज्ञान मिला है तो विचार सगार मथन चलता है। और तो कोई का चलता नहीं। यह भी तुम समझते हो। देहअभिमान करण देह को ही पूजेंतेव है। आत्मा पुनर्जन्म तो जरूर यहां ही लेंगी ना। अभी तुम समझते हो भारत में क्या है। यह पतित आत्माओं की भक्ति है। पावन तो एक ही है। बाप ही गीता ज्ञान देते हैं जिससे सब की सदगति हो जाती है। बाकी हनुमान गणेश आद कोईहोते ही नहीं। इन सब को कहा जाता है भूत पुजारी। अच्छा बच्चों को गडनाईट। नमस्ते।

रात्रि क्लास 4-3-68 ओमशान्ति।

यह तो जानते हैं बाप की सर्विस में रहने से ऊंच पद मिलता है। और कब भी भूख नहीं मरना होता। और जमा भी बहुत होता है। जो जमा होता है वह जा नहीं सकता। विकार में जाने से सब चला जाता है। बाकी कमाई तो बड़ी जबरदस्त है। बेहद के बाप से आधा कल्प का वर्सा मिलता है। यह मनुष्य समझते हैं बाप आते हैं जरूर। वही नईदुनिया स्थापन करते हैं। बच्चे जानते हैं आधा कल्प है भक्ति जिसको ही रात कहा जाता है। अभी तुम अपने लिए अपनी राजधानी स्थापन कर रहे हो। जो सतोप्रधान थे वही तमोप्रधान बने हैं फिरसतोप्रधान बनना है याद की यात्रा से। जितना याद करेंगे उतनी ही खुशी होगी। कलियुग को पार कर जाना है। आत्मा प्युर होती जाती है। बैटरी जितनी चार्ज करेंगे उतना ही पद मिलेगा। इतनी खुशी होगी। पाईन्टस पर ही मदार है पवित्रता का। बाप तो है चकमक। वह कोशिश करते हैं। शुरू में कितनी कोशिश चकमक ने की। इन की भी आत्मा तमोप्रधान थी ना। याद से कट उतरेगी खुशी होगी। कल हम यह जाकर बच्चा बनेंगे। खुशी है ना। बाप का अकेला बच्चा हूं। बाप को तो याद कर खुशी होती है। ओ हो बेहद का मालिक बनता हूं। इनका जैसे प्रसिध है। नम्बरवन में जावेंगे। मभा के लिए भी प्रसिध है। ब्रहमा सरस्वती से ल0ना0 बनना है। बच्चों को समझाया है विष्णु सो 84 जन्मों के बाद ब्रहमा बनता है। ब्रहमा एक जन्म में सो विष्णु बनता है। फिर गिरेगा फिर एडाप्ट हो ब्रहमा बनेंगे। यह बताते हैं मैं कैसे बाप को याद करता हूं। ब्रहमा सो विष्णु नाभा-मभा ग्रामो है। ब्रहमा सो विष्णु कैसे बनते हैं सो बच्चों ने समझा। याद की यात्रा और स्वदर्शन चक्र फिरता रहता है। यह है बेहद के बाप से सहज वर्सा पाना। बाप को जाना और वर्सा हो गया। फिर पुरुषार्थ भी करना पड़े। नये2 पाईन्टस बताते रहते हैं। ल0नम्बर आत्मा तो तमोप्रधान बन पड़ी है। बाकी मिट्टी की मूर्ति बना कर बैठ पूजा करते हैं। एक शिव को पुजा बाद में सब का पूजा शुरू होती है। बच्चे जानते हैं यह सब हैं झूठे शास्त्र आद। तुम बताते हो भक्ति से दुर्गति को पाया है। है तो ठीक। परन्तु मनुष्य सुनते हैं तो बिगड़ते हैं। पत्थर मारते हैं। अरे भक्ति दुर्गति है तब तो भगवान आकर सदगति करते हैं। पत्थरबुधि जैसे मतवाले। पत्थर मारने में देरी नहीं करते। यह सब गाधो सिखला कर गये हैं। बच्चियां बैठ समझती है। इन्हों की कलेक्टर और अपने कैलेक्टर देखो। तुम बच्चों को सारे विश्व का मालिक बनाया जाता है। हद आद कुछ नहीं है। हद और बेहद से पार फिर है मुक्तिधाम। एक तो घर को याद करो फिर सुखधाम को याद करो। यह दुःखधाम भूल जाओ। सुखधाम में यह कुछ भी होगा नहीं। यह सब कब्रस्थान हो जाता है। तुम बच्चों को खुशी तो जरूर रहती है। जितना याद करते जावेंगे उतना खुशी का पारा चढ़ता जावेगा। बुद्धि साफ हो जावेंगे तो चकमक को भी खायेंगे। अभी तुम देखते हो जंक चढ़ा हुआ है। बाप में इतनी ताकत है जो सारी जंक निकल जाती है।

इसलिए सर्वशक्तिवान कहते हैं। बाप कहते हैं मैं कुछ भी करता नहीं हूं। मेरा तो काम ही है रास्ता बताना। बाप को भूले जैल खलास। फिर बाप को याद करने से मालिक बन जाते हो। यह भी तुम जानते हो। यह चक्र भी याद रखो तो बहुत खुशी रहे। भगवान हमको पढ़ाते हैं भगवान-भगवती बनाने। परन्तु माया खुशी में रहने न देती है। जब तक जंक न निकले। पतित को पावनबनना है। तमोप्रधान से सतोप्रधान इस एक ही जन्म में बनना है। ड्रामा प्लैन अनुसार हरेक पुरुषार्थ कर रहे हैं। न चाहते भी संकल्पों-विकल्पों के तूफान बहुत आवेंगे। क्योंकि तुम अविनाशी सर्जन की दवाई करते हो। तो बिमारी उठेंगी। इसको ही तूफान कहा जाता है। बाबा ने समझाया है शिव के', ल०ना०के, राम के पुजारी अच्छा उठावेंगे। उनको झट सांप पें आवेगा। और गंगा घाट पर जाये बैठो। बोलो पतितपावन तो बाप है या यह पानी। इन से तुम पावन कैसे बनेंगे। बाबा फरुखाबाद वालों को चैक लिखेंगे। जो बाबा पर्चे के लिए कहते रहते हैं और कोई ने छपा कर नहीं भेजा है। उन्हों ने भेजा है। अच्छी मेहनत म्युजियम आद बना रहे हैं। अपना2 देते रहते हैं म्युजियम खोलो। बहुतों का कल्याण होगा। लिमित हम बनेंगे बहुतों को आशीर्वाद मिलेंगी। अज्ञान काल में भी बाप से लेते हैं। बाप से दो मूठी चावल बदलीमडल लेते हैं यह तो सब से अच्छा हुआ ना। ऐसे बाप को तो बहुत लव लवली याद करना चाहिए। तुम अपने लिए राजधानी स्थापन कर रहे हो। अब राजतिलक के लायक अपन को बनाना है। टीचर टीच करने लिए बांधा हुआ है। इसमें कृपा आद की बात ही=हवी नहीं। रहम कृपा भी यह गुरुओं ने किया जो तुम विकारी बन पड़े हो। बाप ओबिडियन्ट सर्वेन्ट है। सब को धनवान सुखी स्वर्ग का मालिक बनाकर खुद अपने शान्तिधाम बैठ जाते हैं। ऐसे बापको तो प्यार करना चाहिए ना। भक्ति मार्ग में बच्चों इन्तजार किया है अब बाबा आप आवेंगे तो हम आप के बनेंगे? दूसरा न कोई। बाकी तो यह सब मरे पड़े हैं। हम भी पढ़ाते हैं। जानते हैं पढ़ कर पूरा किया तो यहशरीर खत्म हो जावेगा। अभी पढ़ाने वाला आया है। सिर्फ पढ़ना है और बाप को याद करना है। देवीगुण धारण करनी है। लेंगे पिलेंगे तो होंगे खराब। ऊंच पद पाना है तो एक रस होना चाहिए। अच्छा मीठे2 सिकीलधे बच्चों को रूहानी बाप दादा का याद प्यार गुडनाईट। और नमस्ते।

रात्रि क्लास 5-5-68 "शिव बाबा याद है?"

बच्चों के पास जितना समाचार आते हैं और कोई पास नहीं। क्योंकि जैसे बाप सारी सृष्टि के आदि मध्य-अन्त को जानते हैं वैसे बच्चों के पास भी सृष्टि के आदि मध्य अन्त का समाचार है। इसलिए इनको स्वदर्शनचक्रधारी कहते हैं। बाप को भी जानते हैं और रचना के आदि मध्य अन्त को भी जानते हैं। सिर्फ चक्र को जानने से नई दुनिया के चक्रवर्ती राजा बन जाते हैं। बच्चे जानते हैं बाप से हम यह पद पा रहे हैं। बाप आकरनर से नारायण बनाने का ज्ञान दे रहे हैं। आत्मा जब तक प्युर न हुई है तो यह बन न सके। इसलिए बाप याद की यात्रा सिखला रहे हैं। अपन को आत्मा समझ बाप को याद करे तब ही पाप भस्म हो। यह है योगाग्नि। यह ज्ञान मिलता ही है कल्प के पुरुषोत्तम संगम युग पर। इसमें आस्तिक भी बनते हैं। बाप को और रचना को जानने से। त्रिकालदर्शी भी बनते हैं। बच्चों को अभी याद है चक्र पूरा हुआ। यह दुनिया अभी खत्म होती है। इसको फिर बेहद का वैराग्य कहा जाता है। बेहद का वैराग्य सिर्फ प्रवृति मार्ग वाले ही करते हैं। निवृति मार्ग वालों का धर्म है ही अलग। पुराने विश्व का सन्यास और नये विश्व की याद रहती है। बाप कहते हैं मैं आता ही हूं संगम पर। पुरानी दुनिया का पूरा सन्यास चाहिये। इन आंखों से जो कुछ देखते हैं वह विनाश हो जाना है। बच्चों को विनाश का सा० भी हुआ। यह भक्ति मार्ग नहीं। भक्ति मार्ग में अनेकों को याद करना पड़ता है। पूजा करनी पड़ती है। लौकिक के बाप के होते पारलौकिक को कहते थे बाबा आप आवेंगे तो हम आप का बन2। जन्म लिये वर्सा लेंगे। ज्ञान और भक्ति का ड्रामा में नूंध है। ज्ञान से विश्व का मालिक भक्ति से विश्व का गुलाम बनते हो। यहां प्रकृति भी रिगार्ड देती है। यहां प्रकृति भी दुःख देती है।